आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received:6/03/2024; Accepted:12/03/2024; Published:24/03/2024

मंडन मिसिर की खुरपी कहानी में वृद्ध विमर्श

डॉ. पी .एम.भुमरे
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभागप्रमुख,
एस.एम. बी. पी.के महाविद्यालय,शंकरनगर
तह- बिलोली,जि.- नांदेड
भ्रमणध्वनि - 9881641369
ई-मेल - bhumare1984@Gmail.com

डॉ. पी .एम.भुमरे, **मंडन मिसिर की खुरपी कहानी में वृद्ध विमर्श**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(6-11)

सार - हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श यह कोई नया विषय नहीं है।क्योंकि प्रेमचंद के कथा साहित्य से ही वृद्धों के समस्याओं की अभिव्यक्ति होती रही है फर्क़ इतना ही है कि, आज वृद्ध विमर्श साहित्य का केंद्र बना हुआ है।क्योंकि वर्तमान के दौर में वृद्ध समस्या और वेदना में वृद्धि हुई है।आजादी के बाद सभी क्षेत्रों में जो औद्योगिकीकरण,नगरीकरण से जैसे क्षेत्रों का आर्थिक विकास हुआ है।इसके मानवीय समाज पर अच्छे और बुरे दुष्परिणाम भी देखे जाते हैं।विशेष रूप से महानगरों में विभक्त कुटुम्ब पद्धति , व्यक्ती स्वतंत्रता के प्रभाव के दुष्परिणाम वृद्धों को भुगतने पड रहें हैं ।वृद्धों के जीवन में अकेलेपन और अनाथ का जीवन मजबूर होकर जीना पड रहा हैं।इसी के परिणाम को दर्शाने हेतु कथाकारों ने चिंतन किया है।जिसका उद्देश्य वृद्धों के जीवन और समस्याओं से परिचित कराना है ।

मुख्य शब्द - वृद्ध विमर्श, अकेलापन, अनाथ, पारिवारिक रिश्ते, आर्थिक घुटन, सधनता, निराधार, खेती, जीवनयापन मंडन मिसिर, भौतिक प्रगति, उपेक्षा, मान-सम्मान आदि।

साहित्य को समाज का आईना कहा जाता है क्योंकि साहित्य में जिस समस्याओं और विचारों का अंतरभाव होता है वह समाज की देन होती है । साहित्यकार भी समाज के अभिन्न अंग होते है । इस सृष्टि के निर्माण का समय जितना पुराना है उतना ही साहित्य और मानव समाज का नाता पुराना है । जन्म और मृत्यु सृष्टि में होते रहते हैं । यह तो निश्चित है कि, सृष्टि में जिसका भी जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अटल है।जैसे

कि,मनुष्य अपने जीवन में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए वार्धक्य की स्थिति में पहुंच जाता है। वार्धक्य आने पर मनुष्य जर्जर अवस्था से होकर जीवन के अंत की और प्रस्थान करता है। साथ ही जीवन के विभिन्न पडाओ पर जोश और फुर्तीले स्वभाव की अभिव्यक्ति होती रहती है। अंतर केवल इतना ही है कि, वृद्धावस्था में शरीर, बुद्धि ,स्वास्थ्य साथ नहीं देते। ऐसी स्थिति में वृद्ध अपने परिवार और समाज के साथ होने जरूरी होते है। आधुनिकता के दौर में संयुक्त कुटुम्ब पद्धति का टूटना, सामाजिक मूल्यों के प्रति अनास्था और घुटन से रिश्तों में टूटन और आडंबर हीन प्रवृत्ति का प्रवेश हो चुका है। जब स्वयं के जीवन में बुढ़ापा आता है तो कोई भी साथ नहीं देता ,ऐसे में थक चुके वार्धक्य का कोई सहारा नहीं होता। आज हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में वृद्ध विमर्श का दौर चल रहा है, रचनाकार वृद्धों के जीवन की संघर्ष और पीड़ा की अभिव्यक्ति लिख रहे हैं।

हिंदी कहानी विधा में वृद्ध विमर्श की परंपरा का लेखन कार्य कथासम्राट प्रेमचंद की कहानियों से प्रारंभ होता है। तब से वृद्ध विमर्श की परंपरा का लेखन कार्य होता रहा है। स्वतंत्रता के बाद सभी क्षेत्रों में आर्थिक सधनता बड़े पैमाने पर आ चुकी है। आर्थिक सधनता के परिणाम से नई पीढ़ी के जीवन में भौतिक सोच और सुख के साधनों की महत्वकांक्षा बढ़ गई हैं। प्रस्तुत कहानी में महानगरों तथा गाँव की वैषम्य स्थिति का वर्णन हुआ है।गाँव और देहात में वृद्धों से बातचीत होती रहती थी जिसके कारण पुराने और नए वर्गों में विचारों का आदान-प्रदान होता था परंतु सामाजिक बदलाव के साथ ही युवा वर्ग की दृष्टि संकीर्ण बन गई है जैसे "एक युग था जब बुढ़ापा सम्मान का प्रतीक समझा जाता था। तब वृद्ध अपने अनुभवो के कारण सर्वोच्च स्थान के अधिकारी समझ जाते थे। उनके निर्देशों की आवश्यकता अनुभव की जाती थी परंतु अब परिस्थितियां भिन्न हो गई है।"1 भौतिक सोच के परिणाम से ऐक्य , सद्भाव ,सहृदयता जैसे वृत्ति के पतनशील हो जाने से वृद्ध अपने परिवार से कट रहे हैं। अपितु उन्हें मजबूर होकर परिवार , गांव छोड़कर अकेले जीवनयापन करना पड़ रहा है। गांव हो यहां शहर सभी स्थानों पर अकेले जीवन यापन करने की समस्या ने उग्र रूप धारण कर लिया है ऐसी स्थिति में साहित्यकार मौन साधना नहीं कर सकते अपितु वृद्धों की समस्या पर लिखने की परंपरा प्रारंभ हुई इसी, परंपरा में हिंदी के एक ऐसे ही साहित्यकार ने वृद्ध व्यक्ति के अकेलेपन और उसकी पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। सूर्यनाथ सिंह संवेदनशील साहित्यकार के रूप में लोकप्रिय रहे हैं, क्योंकि उनके साहित्य में किसान, स्त्री और वृद्ध के समस्याओं के प्रति सहानुभूति है जो यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है।

इस कहानी में खुरपी नाम का एक छोटा सा औजार है जो खेती में से घास निकालने में सहायक होता है। सूर्यनाथ सिंह के द्वारा लिखी गई मंडन मिसिर की खुरपी कहानी का प्रमुख पात्र मंडन मिसिर है जो वृद्ध होने पर जीवन के अंतिम दिनों में परिवार से अकेले में जीवनयापन करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। नई पीढ़ी वृद्धों को पुराने पीढ़ी का कहकर टालने की कोशिश करती है। जिससे युवकों के भविष्य की दुर्दशा होती है । जो बच्चे माता-पिता एवं बुजुर्गों से ज्ञान एवं अनुभव से लाभान्वित होते हैं उनका जीवन नई ऊंचाई को प्राप्त करता है। माना जाता है कि, " वृद्ध एक स्मृति एक संस्कृति और अनुभव है। इतिहास ने उसकी देह पर पांव रखकर अपना जीवन किया है। वृद्ध को समझना और सहेजना एक संपूर्ण युग को समझना और सहेजना है।"2 कहानी में मंडन मिसिर को अपने बाप दादाओ से जो खेती-बाड़ी मिली है उसी में अपना जीवनयापन चलाते हैं। घर पर तीन बेटियां और एक बेटे के पालन पोषण करके मंडन मिसिर ने कोई

कसर रहने नहीं दी । वे धन दौलत के लालची नहीं थे जितना आवश्यक है उतना अपने पास रखने के पक्षधर थे। इसी कारण बेटियों की शादी में खेत बेचने में हिचकिचाते नहीं है वह कहते हैं कि, "क्या करेंगे ई खेतो - बारी सहज के। बेटियों के हिस्से का बेच के उनका दे रहा हूं। बेटे के हिस्से का रखेंगे"3 बेटे की शादी में धूमधाम से पैसा खर्च करते हैं।कुछ कारणों से बेटे और बहू में अनबन होती है। बेटे और बहू द्वारा पैसे मांगे जाने पर मंडन मिसिर के पास जमीन बेचने के अलावा कुछ था नहीं तब बहू-बेटे द्वारा जमीन बेचने का सुझाव दिया जाता है। जैसे "बहु छेड बैठी बात जमीन जायदाद की... वह भी देने भर का पैसा नहीं है। मैंने तो इनसे कहा कि, पिताजी से मांग लो। गांव में कुछ खेत बेच दो।मगर यह है कि, सुनते ही नहीं।"4 बचपन से लेकर बड़े होने तक बेटे ने बाप से कुछ भी नहीं मांगा है परंतु मंडन मिसिर को अकेला बेटा होने से ज़रूरतें समय पर पूरी करते है । मंडन मिसिर का स्वभाव शांत एवं संयमी रहा हैं । इसलिए दूसरों के सुख दुख में अपना सुख- दुख देखने की उनकी विशेषता हैं।उन्हें बेटे का दुख देखा नहीं जाता था, इस कारण उनके पास जो भी खेती-बाड़ी बची थी उसे बेचकर बेटे को पैसे दे देते हैं ।पैसे लेकर बेटा और बहू बेंगलूर चले जाते हैं। उनके भोले स्वभाव को देखकर गाँववाले,उन पर फबतीया कसते हैं । इन कारणों से मंडन मिसिर की पीड़ा असहनीय हो जाती है । जिस कारण मंडन मिसिर को अकेले और वृद्धत्व के जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक समय ऐसे था कि, मंडन मिसिर महाराज से छोटे बड़े गांव के लोग बात करते थे साथ ही उनसे विचार विमर्श करके ज्ञान से लाभान्वित होते थे परन्तु बहु और बेटे का विवाद उन्हें चुभ जाता है। महानगरों में व्यक्ति स्वतंत्रता अधिक होती है जिससे सुख के सभी साधन प्राप्त होते हैं । नई पीढ़ी की भौतिक सोच के परिणाम से सांस्कृतिक मूल्य और अपनेपन की भावना का पतन हो रहा है। वृद्ध थके हुए हो परंतु छोटे कामों में सहायता भी करते हैं। जैसे घर में वृद्ध है तो बच्चों को संस्कृति, आचार- विचार ,अच्छा बुराई से परिचित कराने का कार्य भी करते रहते हैं । मंडन मिसिर द्वारा पोते को कहानी सुनाना और उपदेशक जैसे प्रसंग बताए जाने पर बहू द्वारा पोती को डांटना, मारना जैसी हरकते की जाती है । जिससे स्पष्ट होता है कि, नई पीढ़ी वृद्धों के प्रति संकीर्ण मानसिक सोच को अपनाते हैं। मंडन मिसिर अनपढ़ होकर भी बेटा और बेटी में भेदभाव नहीं मानते।उनके लिए दोनों बेटे बेटी समान है ।इन्हीं कारण से जमीन बेचते समय तनिक सोचते नहीं है और बेटे को पैसे देते हैं "मगर अब तो खेती बारी भी कहां रह गई है। बेटियों की शादी के बाद पैंतालीस बीघे खेत बचे थे। उनमें से पांच बीघे रखकर सारा पैसा बेटे- बहु को दे दिया"5 आज की पीढ़ी के लिए वृद्ध बोझ बनते जा रहे हैं जैसे, बेटे और बहू को अपने पास की जमीन, पैसा देकर भी वृद्ध की भर्त्सना होती हैं। बहू और बेटे में वृद्ध पिता के प्रति सम्मान की भावना नहीं होती। घर में बुजुर्गों के साथ विचार- विमर्श और मान सम्मान करने पर ही परिवार और समाज में सुख, समाधान और स्थैर्य स्थापित हो सकता है। ऐसा प्रश्न हमेशा उठता है कि , वृद्ध के पास क्या नहीं होता ? वृद्ध को किसी से कुछ भी नहीं चाहिए, केवल जीवन में अकेलापन और उदासी के पलों में बोलने और समय देने से ही जीवन में सुख आता हैं मंडन मिसिर के पास ज्ञान का भंडार है साथ ही गांव के सभी बच्चों एवं युवको को मार्गदर्शन का काम भी करते हैं। वे एक आदर्श व्यक्ति है, जिन्होंने तीन बेटियों और बेटे की अच्छी परवरिश की है साथ ही संस्कार, संपन्न बनाने में कार्य किया है । परंतु जमाना आगे बढ़ रहा है वैसे ही विचारों में भी बदलाव आ रहे हैं। । जैसे " का कह सकते हैं भैया जमाना बहुत खराब है। आदमी जिनीगी भर बेटे को पाल पोस के बडा करता है इस उम्मीद में कि, वह बड़ा होकर उसके बुढ़ापे का सहारा बनेगा"6 गांव में मंडन मिसिर सभी का आदर्श है परंतु दुर्भाग्य भी है कि, आधुनिक परिवेश तथा भौतिक प्रभाव से उनके बेटे और बहू द्वारा उन्हें वृद्धावस्था में अकेलेपन का जीवन जीना पड़ता है। बहू और बेटे में जो अनबन हो रही है

उसके कई कारण भी है ,जो परिवार सधन होते हैं वह परिवार सुखी होते हैं। आमतौर पर हमारी ऐसी सोच होती है । आज के दौर में लोगों के पास सब है फिर भी सुखी नहीं है। पारिवारिक सुख तो इसी में है कि, सबके साथ मिलकर सुख दुख बांटे। सुखी रहने हेतु केवल धन ही काफी नहीं होता बल्कि पति-पत्नी में अनबन के मुख्य कारण आर्थिक संतुलन न होने का रहा है।

हमारी ऐसी धारणा है कि,भौतिक साधन आने से सुख मिल जाएगा। इस कहानी के पति-पत्नी नई पीढ़ी के प्रतीक है। इस कहानी का पति - पत्नी वर्ग सुख के साधन जुटाता है। जैसे कि, महानगर में घर बसाना कठिन होता है वैसे ही परिवार की आवश्यकताओं की आपूर्ति अर्थ पर ही निर्भर होती है । आज महानगरों में जीवन जीना मुश्किल हो गया है। आवश्यक चीजों के दाम इतने बढ़ गए हैं कि ,छोटे परिवार को महंगाई की मार पड़ती है ।कहानी के पति - पत्नी दोनो भी नौकरी करते हैं। फिर भी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्णता करने में असमर्थ रहते हैं। मिसिर की बहू को गहने प्यारे होते हैं, गहने न होने से बहू पति तथा ससुर को ताने भी मारती है। गहनों की चाहत से पति से झगड़ा करना, और विवाह विच्छेद जैसी गंभीर समस्या भी उग्र रूप धारण करती हैं । जिसके कारण पारिवारिक सुख समाप्त होता है।घर और गहनों के लिए खेती बेचना यह प्रगति का लक्षण नहीं है। जैसे " कोणों का औलाद सदमा है ।सब खेती-बाड़ी बेच के दे दिए बेटा को मगर बेटा अपना न होके बहू की सुनता है ।मिसिर महाराज दुनिया भर में ज्ञान बघारते रहे, मगर हार गए अपनों से"।7 मंडन मिसिर का भी यही हाल है ,क्योंकि बहू और बेटा आपस में किसी ना किसी घर के मामले में झगड़े करते हैं, बहू और बेटे के अनबन की चर्चा गाँव में फैल जाती है वैसे ही मंडन मिसिर की आत्मा छलनी हो जाती है। ऐसी स्थिति में उन्हें पुराने दिनों की याद आती हैं।कहा जाता है कि, दुःख के दिन कटते नहीं पर सुख के दिन कब निकल जाते हैं। मंडन मिसिर अनुभवी वृद्ध है जिनके साथ गाँव के चौराहे में बैठकर लोग विचार विमर्श करते हैं।गांव के लोग अपने काम से काम रखते तो है ही पर संकट के समय सहायता भी करते हैं। वह नियम के पक्के होने के कारण पूजा-पाठ में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। पिछले कुछ दिनों से उनका तबीयत साथ नहीं देती है,उन्हें कुछ याद भी नहीं आता, क्या काम करना, कहां जाना है बीच में ही भूल जाते हैं । जैसे कोई बड़ा सदमा उन्हें लगा है ,घर में अकेले होने से समय पर भोजन नहीं मिलता हैं । इसके परिणाम से उनका स्वास्थ्य बिगड़ भी जाता हैं । लोगों से मिलना- जुलना ,बातें करना बंद हो चुका है। कहा जाता है कि, अपने बेटे का सौतेला व्यवहार पिताजी को बर्दाश्त नहीं होता। चिंता करने से स्वास्थ्य में गिरावट आ जाती है। बल्कि बुढ़ापे के इस पड़ाव पर औलाद ही आधार होती।

जब तक लोग काम करते रहते हैं तब तक मीठा बोलते हैं। जैसे ही उनका स्वार्थ पूरा हो जाता हैं वैसे ही उनके व्यवहार में बदलाव आता है। बेटा और बहू भी पिता की जायदाद अपने नाम करने तक सेवा करते हैं। जैसे ही जमीन बेटे के नाम हो जाती हैं तब से उनके व्यवहार में बदलाव आता है। जैसे "बात तो सही है बेटा । गाँव की जमीन जायदाद तुम्हारी है । उसका चाहे जैसे, जब इस्तेमाल करो मैं जाते ही तुम लोगों के नाम वसीयत लिख दूंगा"8 गाँव में तो कुछ भी बचा नहीं है। जब तक उनके नाम खेती-बाड़ी थी तब तक बहू और बेटे कुशल पूछते थे । मिलना जुलना भी होता था। परंतु जमीन बेचकर मिले हुए पैसे बेटे और बहू हमेशा के लिए गाँव से लेकर बेंगलुरु निकल जाते हैं । मंडन मिसिर यह सब देखते हैं तो अपने को टूटा हुआ महसूस करते हैं । "हैरानी की बात है कि, बेटे- बहु को उनकी फिक्र नहीं। दो महीना पहले बेटा आया था। खेत बेचने से

मिले पैसे लेकर चला गया ।एक बार भी नहीं कहा कि, पिताजी आप हमारे साथ चलो"।9 मंडन मिसिर बहू-बेटा जाने के बाद घर पर अकेले में जीवनयापन करते हैं तो गाँव में चर्चा फैल जाती है कि, मंडन मिसिर और उनके बहू - बेटे में अनबन है। यह सब सुनकर मंडन मिसिर का गाँव में रहना भी मुश्किल हो जाता है।

आज के जमाने में पढ़े लिखे लोग माता-पिता से ऐसा व्यवहार करेंगे तो मां बाप का जीना तो मुश्किल हो जाता है परंतु किए गए अपने जीवन के कष्ट याद आने पर जीवन की सच्चाई से रूबरू होते हैं ।आज भी गाँवों में उदार वृत्ति के दर्शन होते हैं जिससे सभी एक-दूसरे में घुलमिल जाते हैं । "बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है ,एक ऐसी दृष्टि से जिसमें संवेदना हो और बूढ़े के लिए आदर व सम्मान प्राप्त हो।जीवन देने की आकांक्षा हो"।10 गाँव के लोग एक दूसरे से मिलकर दुख की बाते करते हैं। परंतु मंडन मिसिर का दर्द ही ऐसा है कि, ना रिश्तेदारों को बता सकते हैं,ना गाववालों को। गाँव के और रिश्तेदारों के डर से मंडन मिसिर चुपचाप अयोध्या के लिए निकल जाते हैं । बुढ़ापा हर व्यक्ति के जीवन में आनेवाला है।"जिस समाज में सुरक्षा की भावना है, वहां के वृद्ध सम्मानपूर्वक रहते हैं क्योंकि यहां के युवा उनमें अपना भविष्य देखते हैं । जिस समाज ने संस्कार छोड़े और वृद्धों का तिरस्कार किया ,उनका भविष्य भी अंधकारमय रहेगा।"11इस कहानी से यह संदेश मिलता है कि , बुढ़ापे में जितने धन की आवश्यकता होती है उतना धन स्वयं के पास रखना और किसी से भी अपेक्षा न करना । साथ ही अपने उपज के स्त्रोत अपने पास ही रखना चाहिए।

उपसंहार -

मंडन मिसिर की खुरपी इस कहानी के माध्यम से एक ज्वलंत समस्या अभिव्यक्त हुई है जो कई वर्षों से चली आ रही है। आधुनिक दौर में वृद्धों की समस्या ने उग्र रूप धारण कर लिया है । यह समस्या विश्वव्यापी है जिसके चलते वृद्धों की उपेक्षा,अपमानित और अकेलेपन की पीड़ा झेलनी पड़ रही है। उनके ज्ञान और अनुभव से समाज का भला भी हो सकता, हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि , बुजुर्गों के योगदान से ही समाज, राष्ट्र की उन्नति होती है। उनकी यही आशा रहती है कि , अपने बेटे, परिवार के साथ रहे । उनके साथ बात करें। परंतु आज भौतिक प्रगति के महानगरीय जीवन में बड़े बदलाव आने से पारिवारिक ऐक्य समाप्त होता जा रहा है। समाज और शासन के स्तर पर ऐसी पहल होनी चाहिए की वृद्धों को जीने के साधन सहज रूप से मिले । जिनसे उनके कष्टों को दूर करने हेतु व्यक्ति,परिवार और समाज के स्तर पर निश्चित व्यवस्था हो। हमारे रिश्तों में भी केवल आर्थिक दृष्टि की सोच ही नहीं होनी चाहिए। जिन्होंने बेटे - बेटियों के जीवन को बनाने में ,ऊंचाई तक पहुंचाने में अपना योगदान दिया है। वृद्धत्व के समय उनका साथ देने से ही रिश्तो में अपनेपन के भाव में वृद्धि होगी।साथ ही उनके अनुभव का लाभ परिवार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण में सहायक होगा।

संदर्भ -

1. संपादक गिरिराज शरण अग्रवाल - वृद्धावस्था की कहानीयाॅ- पृष्ठ- 6-7 प्र.2004
2. वागर्थ- 56, दिसंबर 1999 पृष्ठ - 8
3. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ - 110
4. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन - 2019 पृष्ठ-112

5. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ-111
6. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ-107
7. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ-107
8. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ- 113
9. डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ-107
10. मनीष सुथार- हिंदी कथा साहित्य में वृद्धि विमर्श - वान्या पब्लिकेशंस कानपुर, पृष्ठ- 121, सं.-2022
11. विकास नारायण राय - प्रेमचंद से दोस्ती, इतिहास बोध प्रकाशन- इलाहाबाद पृष्ठ-18, प्र.2003
12.डॉ. सुजीत सिंह परिहार- साहित्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ-108

****